

যঈফ ও জাল হাদিস

হাদিস নম্বরঃ ২২০

১/ বিবিধ

আরবী

إن له (يعني إبراهيم بن محمد صلى الله عليه وسلم) مرضعا في الجنة، ولو عاش
لكان صديقا نبيا، ولو عاش لعثقت أخواله القبط، وما استرق قبطي قط
ضعيف

أخرجه ابن ماجه (1 / 459 - 460) من طريق إبراهيم بن عثمان، حدثنا الحكم بن
عتيبة عن مقسم عن ابن عباس قال: لما مات إبراهيم ابن رسول الله صلى الله عليه
وسلم صلى رسول الله عليه وقال: فذكره
وهذا سند ضعيف من أجل إبراهيم بن عثمان، فإنه متفق على ضعفه، ولكن الجملة
الأولى من الحديث وردت من حديث البراء، رواه أحمد (4 / 283، 284، 289، 297،
300، 302، 304) وغيره بأسانيد بعضها صحيح
والجملة الثانية وردت عن عبد الله بن أبي أوفى قيل له: رأيت إبراهيم ابن رسول الله؟
قال: مات وهو صغير، ولوقضي أن يكون بعد محمد صلى الله عليه وسلم نبي لعاش
ابنه ولكن لا نبي بعده، رواه البخاري في " صحيحه " (10 / 476) وابن ماجه (1 /
459) وأحمد (4 / 353) ولفظه: ولو كان بعد النبي صلى الله عليه وسلم نبي ما مات
ابنه إبراهيم، وعن أنس قال: رحمة الله على إبراهيم لعاش كان صديقا نبيا، أخرجه
أحمد (3 / 133 و 280 - 281) بسند صحيح على شرط مسلم، ورواه ابن منده وزاد:
" ولكن لم يكن ليبقى لأن نبيكم آخر الأنبياء " كما في " الفتح " للحافظ ابن حجر (10 /
476) وصححه

وهذه الروايات وإن كانت موقوفة فلها حكم الرفع إذ هي من الأمور الغيبية التي لا مجال للرأي فيها، فإذا عرفت هذا يتبين لك ضلال القاديانية في احتجاجهم بهذه الجملة: "لوعاش إبراهيم لكان نبيا" على دعواهم الباطلة في استمرار النبوة بعده صلى الله عليه وسلم لأنها لا تصح هكذا عنه صلى الله عليه وسلم وإن ذهبوا إلى تقويتها بالآثار التي ذكرنا كما صنعنا نحن فهي تلقمهم حجرا وتعكس دليلهم عليهم إذ إنها تصرح أن وفاة إبراهيم عليه السلام صغيرا كان بسبب أنه لا نبي بعده صلى الله عليه وسلم ولربما جادلوا في هذا - كما هو دأبهم - وحاولوا أن يوهنوا من الاستدلال بهذه الآثار، وأن يرفعوا عنها حكم الرفع، ولكنهم لم ولن يستطيعوا الانفكاك مما ألزمناهم به من ضعف دليلهم هذا ولومن الوجه الأول وهو أنه لم يصح عنه صلى الله عليه وسلم مرفوعا صراحة

বাংলা

২২০। অবশ্যই তার জন্য (অর্থাৎ ইবরাহীম ইবনু মুহাম্মাদ এর জন্য) জালাতে দুধ মাতা থাকবে। সে যদি জীবিত থাকত; তাহলে অবশ্যই সত্যবাদী নবী হত। যদি জীবিত থাকত তাহলে অবশ্যই তার কিবতী আমার মুক্ত হয়ে যেত এবং কোন কিতবী কখনও দাসত্ব গ্রহণ করত না।

হাদীসটি দুর্বল।

এটি ইবনু মাজাহ (১/৪৫৯-৪৬০) ইবরাহীম ইবনু উসমান সুত্রে বর্ণনা করেছেন। এটির সনদ দুর্বল এ ইবরাহীম ইবনু উসমান-এর কারণে। কেননা তার দুর্বল হওয়ার ব্যাপারে সকলেই একমত।

হাদীসটির প্রথম বাক্যটি বারা (রাঃ)-এর হাদীস হতে কোন কোন সহীহ সনদে বর্ণিত হয়েছে। সেটি ইমাম আহমাদ ও অন্যরা বর্ণনা করেছেন। আর দ্বিতীয় বাক্যটি আব্দুল্লাহ ইবনু আবী আওফা হতে বর্ণিত হয়েছেঃ

مات وهو صغير، ولوقضي أن يكون بعد محمد صلى الله عليه وسلم نبي لعاش ابنه ولكن لا نبي بعده

তিনি বলেনঃ 'ছোট অবস্থায় সে মারা গেছে, যদি এমন ফয়সালা থাকত যে, নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম-এর পরে নবী হবে তাহলে সে জীবিত থাকত। কিন্তু তার পরে কোন নবী নেই।

এটি ইমাম বুখারী তার সহীহার মধ্যে (১০/৪৭৬), ইবনু মাজাহ (১/৪৫৯) ও আহমাদ (৪/৩৫৩) বর্ণনা করেছেন।

তবে আহমাদের ভাষা এরূপঃ

لو كان بعد النبي صلى الله عليه وسلم نبي ما مات ابنه إبراهيم

যদি নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম-এর পরে কোন নবী হতো তাহলে তার পুত্র ইবরাহীম মারা যেত না।

অনুরূপ ভাবে আনাস (রাঃ) হতেও বর্ণিত হয়েছেঃ

رحمة الله على إبراهيم لو عاش كان صديقا نبيا

আল্লাহর রহমত ইবরাহীমের উপর সে যদি জীবিত থাকত তাহলে সত্যবাদী নবী হত।

এটি ইমাম আহমাদ (৩/১৩৩...) বর্ণনা করেছেন। এটির সনদ মুসলিমের শর্তানুযায়ী সহীহ। ইবনু মান্দাও বর্ণনা করেছেন, কিন্তু তিনি তাতে কিছু বেশী বলেছেনঃ

ولكن لم يكن ليبقى لأن نبيكم آخر الأنبياء

তিনি বলেনঃ কিন্তু এমনটি হওয়ার ছিল না যে সে অবশিষ্ট থাকবে, কারণ তোমাদের নবী, নবীকুলের শেষ নবী।

এ বর্ণনাগুলো সবই মওকুফ, কিন্তু মারফূ'র হুকুমে। কারণ এটি হচ্ছে গোপনীয় বিষয়, এতে নিজ মতামতের কোন সুযোগ নেই। এ আসারগুলো যে সঠিক ভাবে বুঝবে তাঁর নিকট কাদিয়ানীদের পথভ্রষ্টতা স্পষ্ট হয়ে যাবে।

হাদিসের মান: যঈফ (Dai'f) পুনঃনিরীক্ষিত

পাবলিশারঃ তাওহীদ পাবলিকেশন

🔗 Link — <https://www.hadithbd.com/hadith/link?id=5480>

📖 হাদিসবিডির প্রজেক্টে অনুদান দিন